International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 10, October 2018
Website- www.aarf.asia, Email :editoraarf@gmail.com

अन्धा युग : आज का परिवेश

डॉ. संयुक्ता थोरात
सहाय्यक आचार्य
ललित कला विभाग,रा.तु.म.
नागपूर विश्वविद्यालय परिसर, नागपूर.

सार

अंधायुग नाटक से बहुत कुछ सिख प्राप्त होती है। भाईचारा, सत्ता की लढाई, खुन के रिश्तो मे दरार, मित्रता की भावना, और फिर अंत मे यह सब किस काम का? यह प्रश्न उपस्थित होता है। युध्द से किसीका भला नही होता यह सिख इस नाटक से मिलती है।

संकेत भाब्द
अंधायुग सत्ता, रिश्ते, मित्रता

परिचय

'अन्धा युग' कदापि न लिखा जाता, यदि उसका लिखना – न लिखना मेरे वश की बात यह गयी होती ! इस कृति का पूरा जटिल वितान जब मेरे अन्तर में उभरा तो मैं असमंजस में पड गया । थोडा डर भी लगा । लगा कि इस अभिषप्र भूमि पर एक कदम भी रक्खा कि फिर बच कर नही लाटूँगा ।

पर एक नषा होता है – अन्धकार के गरजते महासागर की चुनौती को स्वीकार करने का, पर्वताकार लहरों से खाली हाथ जुझने का, अनमापी गहराइयों में उतरने जाने का और फिर अपने को सारे खतरों में डालकर आस्था के, प्रकाष के, सत्य के, मर्यादा के कुछ कणों को बटोर कर, बचा कर, धरातल तक ले जाने का – इस नषे में इतनी गहरी वेदना और इतना तीखा

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

सुख घुला – मिला रहता है कि उसके आस्वादन के लिए मन बेबस हो उठता है । उसी की उपलब्धि के लिए यह कृति लिखी गयी ।

एक स्थल पर आकर मन का डर छुट गया था । कुण्ठा, निराशा, रक्तपात, प्रतिशोध, विकृति, कुरूपता, अन्धापन – इनसे हिचकिचाना क्या इन्हो में तो सत्य के दुर्लभ कण छिपे हुए है, तो इनमें क्यों न निडर धॅसूॅ । इनमें धॅस करी मैं मर नही सकता ! ''हम न मरैं, मरिहै संसार !''

पर नही, संसार भी क्यो मरे ? मैंने जब वेदना सब की भोगी है, तो जो सत्य पाया है, वह अकेले मेरा कैसे हुआ ? एक धरातल एसा भी होता है जहॉ 'निजी' और 'व्यापक' का बाह्य अन्तर मिट जाता है । वे भिन्न नहों रहते । 'कहियत भिन्न न भिन्न' ।

पर नहीं, संसार भी क्यों मरे ? मैंने जब वेदना सब की भोगी है, तो जो सत्य पाया है, वह अकेले मेरा कैसे हुआ ? एक धरातल ऐसा भी होता है जहा 'निजी' और 'व्यापक' का बाह्य अन्तर मिट जाता है । वे भिन्न नहीं रहते । 'कहियत भिन्न न भिन्न । '

यह तो 'व्यापक' सत्य है । जिसकी 'निजी' उपलब्धि मैंने की ही – उसकी मर्यादा इसी में है कि वह पुनः व्यापक हो जाये ....

– धर्मवीर भारती

स्व. डॉ. धर्मवीर भारती : संक्षिप्त जीवन परिचय

जन्म	:	25 दिसंबर 1826 प्रयाग के अतरसुइया मुहल्ले में
पिता	:	स्व. श्री चिरंजीव लाल वर्मा
माता	:	स्व. श्रीमती चंदा देवी
पत्नी	:	पुश्पा भारती
संतान	:	पारमिता मित्तल, किंषुक भारती, प्रज्ञा भारती.

बचपन और षिक्षा : षाहजहांपूर के निकट खुदागंज कस्बे के पुराने जमींदार परिवार के पॉच भाइयों में से एक थे, चिरंजीव लाल वर्मा । उन्होंने पुष्तैनी रहन – सहन छोडकर–रूडकी से ओवरसीयरी की षिक्षा प्राप्त की । कुछ दिन बर्मा में सरकारी नौकरी और ठेकेदारी की, फिर उत्तर प्रदेष मे लौटकर पहले मिर्जापुर और फिर स्थायी रूप से इलाहाबाद में बस गये ।

बालक धर्मवीर बचपन में एक दो वर्श पिता के साथ आजमगढ और मऊनाथ भंजन में रहे । प्रारंभिक षिक्षा घर पर ही हुई । इलाहाबाद के डी. ए. वी. हाई स्कुल में पहली बार चौथी क्लास में नाम लिखाया गया । आठवीं कक्षा में थे तभी पिता का देहांत हो गया । उसके बाद बहुत दारूण गरीबी में दिन बीते । प्रयाग में बसे मामा श्री अभयकृश्ण जौहरी के परिवार के साथ रहकर उच्च षिक्षा प्राप्त की । कायस्थ पाठषाला इंटर कालेज से सन् 1842 में इंटरमीडिएट पास किया । बयालीस के आंदोलन में भाग लिया और पढाई एक बरस रूक गयी । सन 1845 में प्रयोग विष्वविद्यालय से बी. ए. की डिग्री प्राप्त की व हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर चिंतामणि घोश मैडल के हकदार बने । सन् 1847 में वही से प्रथम श्रेणी में एम. ए. करने के बाद डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देषन में सिध्द साहित्य पर षोध प्रबंध लिखकर पी. एच. डी. की डिग्री प्राप्त की ।

आजीविका : छात्र जीवन से ही ट्यूषनें कर आत्मनिर्भर होना पडा । एम. ए. की पढाई का खर्च 'अभ्युदय' (सम्पादक : श्री पदाकांत मालवीय) में पार्ट टाइम काम करके निकाला । 1848 में 'संगम' (सम्पादक श्री इलाचंद्र जोषी) में सहकारी संपादक नियुक्त हुए । दो वर्श वहॉ काम करने के बाद हिदुस्तानी अकादमी में उपसचिव का कार्य किया । तदुपरांत प्रयाग विष्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अध्यापक नियुक्त हुए । सन् 1860 तक वहॉ कार्य किया । प्रयाग विष्वविद्यालय में अध्यापन के दौरान

'हिंदी साहित्य कोष' के सम्पादन में सहयोग दिया । 'निकश' पत्रिका निकाली तथा 'आलोचना' का सम्पादन भी किया । उसके बाद 'धर्मयुग' में प्रधान सम्पादक पद पर बम्बई आ गये । 'धर्मयुग' हिंदी के सर्वश्रेश्ठ साप्ताहिक के रूप में स्थापित हुआ । 1887 में डॉ. भारती ने अवकाष ग्रहण किया । 1888 में हदय रोग से गंभीर रू॰ से बीमार हो गये । गहन चिकित्सा के बाद प्राण तो बच गये किन्तु स्वास्थ पूरी तरह कभी सुधरा नहीं और 4 सितंबर 1887 को देहावसान हो गया । नींद में ही मृत्यु ने वरण कर लिया ।

यात्राऍ : सन 1861 म कामनवेल्थ रिलेषन्स कमेटी के आमंत्रण पर प्रथम विदेष यात्रा पर इंगलैंड तथा यूरोप भ्रमण । पष्चिम जर्मन सरकार के आमंत्रण पर 1864 में जर्मनी यात्रा तथा 1866 में भारतीय दूतावास के निमंत्रण पर इंडोनोषिया तथा थाइलैंड की यात्राऍ की । सितंबर 1871 में मुक्तिवाहिनी के साथ बांगला देष की गुप्त यात्रा की तथा क्रांति का पहला ऑखों देखा

प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत किया । भारत – पाक युध्द 1871 के दौरान भारतीय स्थल सेना के साथ वास्तविक युध्द स्थल पर निरंतर उपस्थित रहकर युध्द के वास्तविक मोर्चे के रोमांचक अनुभवों को लिपिबध्द किया । इसके पहले ऐसा काम कभी किसी पत्रकार ने नहीं किया । भारतीय मुल की मारिषसीय जनता की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए जून 1874 में मारिषस की यात्रा की । फिर ऐफ्रो एषियाई कॉन्फ्रेंस में भाग लेने के लिए पुनः मारिषस गये । 1878 में चीन की सिनुआ संवाद समिति के आमंत्रण पर भारत सरकार के डेलीगेषन के सदस्य के रूप में चीन की यात्रा पर गये । 1881 में परिवार के साथ अमरीका यात्रा पर गये । और अपने भारत देष के तो हर प्रांत में बार – बार अनेक यात्राएँ कीं । यात्राएँ डॅ. भारती को बहुत सुख देती थी ।

अलंकरण तथा पुरस्कार : 1872 मं पद श्री से अलंकृत हुए । 1887 में महाराश्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी ने हिन्दी की सर्वश्रेश्ठ रचना को प्रतिवर्श 51,000/– रू. का पुरस्कार देने की घोशणा की । पुरस्कार का नाम है – ''धर्मवीर भारती महाराश्ट्र सारस्वत सम्मान'' 1999 में युवा कहानीकार उदाय प्रकाष के निर्देषन में साहित्य अकादमी दिल्ली के लिए डॉ. भारती पर वृत्त चित्र का निर्माण हुआ ।

अनेक पुरस्कारों में से कुछ इस प्रकार है –

1887 – संगीत नाटक अकादमी के मनोनीत सदस्य

1884 – हल्दी घाटी श्रेश्ठ पत्रकारिता पुरस्कार (महाराणा मेवाड फाऊंडेषन)

1885 – साहित्य अकादमी रत्न सदस्यता सम्मान

1886 – संस्था सम्मान – उत्तर प्रदेष हिन्दी संस्थान

1888 – सर्वश्रेश्ठ नाटककार पुरस्कार, संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली

1889 – डॉ. राजेन्द्रप्रसाद षिखर सम्मान, बिहार सरकार

1886 – गणेष षंकर विद्यार्थी पुरस्कार, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

1886 – भारत भारती पुरस्कार, उत्तर प्रदेष हिन्दी संस्थान

1860 – महिराश्ट्र गौरव – महाराश्ट्र सरकार

1861 – साधना सम्मान, केडिया स्मृति न्यास

1862 – महाराश्ट्राच्या सुपुत्रांचे अभिनंदन सम्मान, वसंत राव नाई प्रतिश्ठान

1864 – व्यास सम्मान, के. के. बिडला फाऊंडेषन

1886 – षासन सम्मान, उत्तर प्रदेष हिन्दी संस्थान

1887 – उत्तर प्रदेष गौरव, अभियान सम्मान संस्थान

प्रकाशन

कहानीसंग्रह

मदों का गांव	..	1846
स्वर्ग और पृथ्वी	..	1856
चॉद और टूटे हुए लोग	..	1855
बंद गली का आखिरी मकान	..	1866
सॉस की कलम से (समस्त कहानियॉ एक साथ)		2000

कविता

ठंडा लोहा	..	1852
अंधा युग	..	1854
सत गीत वर्श	..	1856
क्नुप्रिया	..	1856
स्पना अभी भी	..	1883
आद्यन्त	..	1866

उपन्यास

गुनाहों का देवता	..	1846
सूरज का सातवा घोडा	..	1852
ग्यारह सपनों का देष (प्रारंभ व समापन)		

निबंध

ठेले पर हिमालय	..	1860
पश्यंती	..	1868
कहनी अनकहनी	..	1870
कुछ चेहरे कुछ चिंतन	..	1865

षब्दिता .. 1867

रिपोटिंग

युध्द यात्रा .. 1872

मुक्त क्षेत्रे : युध्द क्षेत्रे .. 1873

आलोचना

प्रगतिवाद–एक समीक्षा .. 1846

मानव मूल्य और साहित्य .. 1860

एकांकी संग्रह

नदी प्यासी थी .. 1854

अनुवाद

ऑस्कर वाइल्ड की कहानियॉ .. 1846

देषातर (इक्कीस देषों की आधुनिक कविताऍ) 1860

षोध प्रबंध

सिध्द साहित्य .. 1868

यात्रा विवरण

यात्रा चक्र .. 1864

पत्र संकलन

अक्षर अक्षर यज्ञ .. 1888

साक्षात्कार

धर्मवीर भारतीय से साक्षात्कार .. 1888

ग्रंथावली

धर्मवीर भारतीय ग्रंथावली (8 खंडा में) .. 1886

इस दृष्य–काव्य में जिन समस्याओं को उठाया गया है, उनके सफल निर्वाह के लिए महाभारत के उत्तराध्र्द की घटनाओं का आश्रय ग्रहण किया गया है । अधिकतर कथावस्तु 'प्रष्चांत' है, केवल कुछ ही तत्व 'उत्पाद्य' है – कुछ स्वकल्पित पात्र और कुछ स्वकल्पित घटनाऍ । प्राचीन पध्दति भी इसकी अनममति देती है । दो प्रहरी, जो घटनाओं और स्थितियों

पर अपनी ख्याख्याएँ देते चलते है, बहुत कुछ ग्रीक कोरस के निम्न वर्ग के पात्रों की भॉति है, किन्तु, उनका अपना प्रतीकात्मक महत्व भी है । कृशण के वधकर्ता का नाम 'जरा' था, ऐसा भागवत में भी मिलता है, लखक ने उसे वृध्द याचक की प्रेत काया मान लिया है ।

समस्त कथावस्तु पॉच अंको में विभाजित है । बीच में अन्तराल है । अन्तराल के पहले दर्षकों को लम्बा मध्यान्तर दिया जा सकता है । मंच –विधान जटिल नही है । एक पर्दा पीछे स्थयी रहेंगा ।

उसके आगे दो पदें रहेंग । सामने का पर्दा अंक के प्रारम्भ में उठेगा और अंक के अन्त तक उठा रहेंगा । उस अवधि में एक ही अंक में दो दृष्य बदलते है, उनमें बीच का पर्दा उठता – गिरता रहता है । बीच का और पीछे का पर्दा चित्रित नही होना चाहिए । मंच की सजावट कम–से–कम होनी चाहिए । प्रकाष –व्यवस्था में अत्यधिक सतर्क रहना चाहिए ।

दृष्य–परिवर्तन या अंक – परिवर्तन के समय कथा–गायन की योजना है । यह पध्दति लोक–नाट्य परम्परा से ली गयी है । कथानक की जो घटनाएँ मंच पर नही दिखाई जाती, उनकी सूचना देने, वातावरण की मार्मिकता को और गहन बनाने का कही–कही उसके प्रतीकात्मक अर्थे को भी स्पष्ट करने के लिए यह कथा–गायन की पध्दति अत्यन्त उपयोगी सिध्द हुई है । कथा–गायक दो रहने चाहिए : एक स्त्रि और एक पुरूश। कथा–गायन में जहॉ छनद बदला है, वहॉ दूसरे गायक को गायन–सूत्र ग्रहण कर लेना चाहिए । वैसे भी आषय क अनुसार, उचित प्रभाव के लिए, पंक्तियों को स्त्री या पुरूश में बॉट देना चाहिए । कथा त्र–गायन स्वर ही प्रमुख रहना चाहिए ।

संवाद मुक्त छन्दों में है और अन्तराल में कितने प्रकार की ही छनद –योजना से मुक्त वृत्तगन्धी गद्य का भी प्रयोग किया गया है । वृत्तगन्धी गद्य की ऐसी पंक्तियॉ अन्यत्र भी मिल जायेंगी । लम्बे नाटक में छनद बदलते रहना आवष्यक प्रतीत हुआ, अन्यथा एकरसता आ जाती । कुछ स्थानों को अपवादस्वरूप छोड दें तो प्रहरियों का सारा वार्तालाप एक निष्चित लय में चलता है जो नाटक के आरम्भ से अन्त तक लगभग एक–सी रहती है । अन्य पात्रों के कथोपकथन में सभी पंक्तियॉ एक ही लय की हों, यह आवष्यक नही । जैसे एक बार बोलने के लिए कोई मूॅह खोले, किन्तु उसी बात को कहने में, मन में भावनाएँ कई बार करवटें बदल लें, तो उसे सम्प्रेशित करने के लिए लय भी अपने को बदल लेती है । मक्त छनद में कोई लिरिक–प्रवृत्ति की कविता अलग से लिखी जाये तो छनद की मूल योजना वही बनी रह

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

सकती है, किन्तु नाटकीय कथन मे इसे मै बहुत आवष्यक नही मानता । कही कही लय का यह परिवर्तन मैने जल्दी–जल्दी ही किया है – उदाहरण के लिए पृश्ठ 78–80 पर संजय के समस्त सम्वाद एक विषिश्ट लय में है, पृश्ठ 81 पर संयज के सम्वाद की यह लय अकस्मात् बदल जाती है ।

जब 'अधना युग' प्रस्तुत किया गया तो अभिनेताओं के साथ एक कठिनाई दीख पडी । वे सम्वादों को या तो बिलकुल कविता की तरह लय के आघात दे–देकर पढते थे, या बिलकुल गद्य की तरह ।

स्थिति इन दोनों के बीच की होनी चाहिए । लय की अपेक्षा अर्थ पर बल प्रमुख होना चाहिए, किन्तु छनद की लय भी ध्वनित होती रहनी चाहिए । अभी इस प्रकार के नाटकों की परम्परा का सूत्रपात ही हो रहा है, किन्तु छन्दात्मक लय, नाटकीय कथन और अर्थ पर आग्रह का जितना सफल समन्वय अष्वत्थामा की भूमिका में श्री. गोपालदा ने 'अन्धा युग' के रेडियो–रूपान्तर में प्रस्तुत किया है, और, उसमें वाल्यूम, अंडर–टोन, ओवर–टोन, ओवरस्लैपिंग टोन्स स्वरों के कम्पन आदि का जैसा उपयोग किया है, वह न केवल इन गीति–नाट्यों, कवरन् समस्त नयी कविता के प्रभात्रोत्पादक पाठ की अमित सम्भावनोओं की और संकेत करता है ।

मूलतः यह काव्य रंगमंच को दृश्टि में रख कर लिखा गया था । यहॉ वह उसी मूल रूप में छापा जा रहा है । लिखे जाने के बाद इसका रेडियो–रूपान्तर भी प्रस्तुत हुआ जिसके कारण इसके सम्वादों की लय और भाशा को मॉजने में कॉफी सहायता मिली । मैने इस बात को भी ध्यान में रक्खा है कि मंच–विधान को थोडा बदल कर यह खुले मंच वाले लोक–नाट्य में भी परिवर्तित किया जा सकता है । अधिक कल्पनाषील निर्देषक इसके रंगमंच को प्रतीकात्मक भी बना सकते है।

निश्कर्श–

अंधायुग इस नाटक को अगर देखा जाए तो 2 लाईन में कह सकते इसका सार – युद्ध से कभी किसी का भला नही होता. द्वापर युग में घटित महाभारत की हर कहानी आज के परिवेष में कही न कही दिखाई देती है । खुन के रिष्ते की विरासत के लिए आपस में लढ रहे है । महाभारत में ही कलयुग का चित्र एक कहानी द्वारा स्पश्ट किया गया था । वह कहानी कुछ इस तरह है । एक बार पांडवो ने कृश्ण से पुछा कलयुग कैसा होगा । तब कृश्ण ने पांचो भाईयों को पॉचो दिषाओ में भेजा कहा की कुछ भी अनोखा अलग आप देखते हो तो उसे मुझे

आकर बताना । पॉचो अलग – अलग दिषा में चले एग । किसीने देखा दो कुॅए है एक सुखा और दुसरा पानी से भरा हुआ बल्की ज्यादा बहावसे पानी बह भी रहा है । कही यह देखा गया कि तो ता ग्रंथो पर बैठा है और मासभक्ष कर रहा है । भोजन कर रहा है तब कृश्ण ने इन सारे संकेतो के अर्थ बताकर कहा कि कलयुग का चित्र ऐसा होगा । द्वापर युग में ही कलयुग की स्थिती ज्ञात हो गई । अंधायुग से हम देख सकते है कि आज के युग में यह कैसा हुबहु लागू पडता है ।

लढाई, झगडा, हिंसा, माया सब कलयुग के निवासी है । महाभारत यह कही बाहर नहीं है । बल्की अपने अंदर है, हर घर की कहानी है । महाभारत कोई किस्सा या कहानी नहीं बल्की मानवी रिष्तों की, संवेदनाओं की, जीत की, हार की, घुटन की, तकलीफ की, जीद की, अच्छाई की, बुराई की, छल की, कपट की, अंधेरे की, ग्लानी की, पश्चाताप की एक सच्ची तसवीर है ।

संदर्भ ग्रंथ –

नाटक अंधायुग – लेखक धर्मवीर भारती
चर्चा – लेखक पराग घोंगे
चर्चा – अभिनेता सलिम शेख
चर्चा –निर्देशक दिपाली घोंगे

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.